शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

foKfIr

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

rjkiFk dh dUnh; xfrfofèk;k dk lokfèkd ykdfi; lkIrkfgd e[ki=k

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक ५ : नई दिल्ली : ६-१२ मई २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी सानंद बालोतरा विराज रहे हैं। ३० अप्रेल को परमपूज्यवर के अमृत महोत्सव का चतुर्थ चरण श्रद्धा-भक्ति एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। आचार्यप्रवर बालोतरा में २१ मई तक प्रवास करेंगे।

vkpk; egkJe.k ver egkRlo d e[; lekjkg e ije J); vkpk;ioj dk exy mnckèku

“जीवन जीने के अनेक लक्ष्य हो सकते हैं। शास्त्र में एक आध्यात्मिक लक्ष्य बताया गया कि पूर्व कर्मों की निर्जरा करने के लिए, उनका क्षय करने के लिए आदमी को शरीर धारण करना चाहिए। आदमी शरीर धारण करता है, आगे से आगे समय बीतता है और आदमी का जीवनकाल बढ़ता जाता है। जन्मदिवस आता है, कुछ लोगों के लिए यह उल्लास का विषय भी बनता होगा, परंतु आदमी को सोचना यह चाहिए कि मैं जीवन में कर क्या रहा हूं? आज मैंने भी जीवन के पचास वर्ष संपन्न कर ५१वें वर्ष में प्रवेश किया है। आधी सदी मैंने जी ली है और आगे बढ रहा हूं।

वैशाख शुक्ला नवमी, वि.सं.२०१९, यानी १३ मई १९६२ को सरदारशहर में मेरा जन्म हुआ। मेरा जन्म दूगड़ परिवार में हुआ। सरदारशहर में कई दूगड़ परिवार हैं। मेरा संसारपक्षीय दूगड़ परिवार मेहरीवाला दूगड़ परिवार कहलाता है। मेहरी गांव से आया हुआ परिवार है, इसलिए मेहरीवाला के नाम से प्रख्यात हुआ।

संसारपक्षीय पिताश्री झूमरमलजी का साया मुझे लंबे काल तक नहीं मिला। मैं लगभग सात वर्ष का था, तभी उनका साया मेरे ऊपर से उठ गया था। आज भी थोड़ा-थोड़ा मेरी स्मृति में है कि वे क्या-क्या करते थे। उनके देहावसान के बाद मेरी संसारपक्षीया मां नेमाबाई का संरक्षण व साया तथा ज्येष्ठ भ्राता सुजानमलजी का संरक्षण मिला। हम लोग छह भाई और दो बहन, कुल आठ भाई-बहिन थे। सरदारशहर के राजेन्द्र विद्यालय में मेरा प्रवेश हुआ। मेरी पढ़ाई कम ही हुई, लेकिन जितनी हुई, वह उसी विद्यालय में हुई। विद्यालय में मुझे अच्छा स्थान प्राप्त हुआ था। अगर मैं भूल न करूं तो तीसरी कक्षा में मुझे कक्षा प्रतिनिधि के रूप में नियुक्त किया गया, यानी अपनी कक्षा का प्रतिनिधित्व करने का जिम्मा मुझे सौंपा गया था। आगे चौथी कक्षा में पहुंचने पर मेरे क्लासटीचर, जिनका नाम संभवतः रिछपालजी था, कक्षा में घोषणा की कि इस चौथी कक्षा का मॉनिटर मोहनलाल दूगड़ रहेगा। इस तरह मुझे मोनिटर के रूप में कक्षा को सेवा देने का मौका मिला। कह सकता हूं कि कक्षा में जो अच्छे विद्यार्थी थे, उनमें एक मैं भी था।

सरदारशहर में तेरापंथ के साधु-साध्वियों का प्रवास होता रहता था। मेरी संसारपक्षीया मां मुझे साध्वियों के पास और संतों का प्रवास होता तो उनके पास ले जाती। ऐसे ही एक बार मुनि दुलीचन्दजी ‘दिनकर’ का प्रवास हुआ तो उनके सहवर्ती मुनिश्री पानमलजी स्वामी के पास बैठने और कुछ सीखने का मौका मिला। वे बच्चों के प्रति बड़ी वत्सलता रखते थे। मुनिश्री आज भी यहां विराजमान हैं। बाद में मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी (लाडनूं), जो यहां मंत्री मुनि के रूप में विराजमान हैं, का वि.सं.२०३० में सरदारशहर चतुर्मास हुआ

तो उनके पास जाने लगा। साधु-साध्वियों के पास जाने का क्रम पहले से ही बना हुआ था। मुनि सोहनलालजी स्वामी (चाड़वास) जो मंत्री मुनिश्री के संसारपक्षीय कजिन भाई लगते थे, मुझ पर बड़ी कृपा की। वे मुझे तत्त्वज्ञान सिखाने लग गए और इस क्रम में मैंने अनेक थोकड़े सीख लिए। तेरापंथ की दान व दया के बारे में भी उन्होंने मुझे समझाया।

श्रद्धेय मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी (लाडनूं) की मुझे अच्छी प्रेरणा मिली, पथदर्शन मिला। उन्होंने कहा कि तुम सोचो, तुम्हें कौन-सा रास्ता लेना है? अब निर्णय कर लेना चाहिए। भाद्रव शुक्ला षष्ठी, वि.सं. २०३० का दिन मेरे जीवन का महत्त्वपूर्ण दिवस बना, जब मैंने मुनिश्री की प्रेरणा से चिंतन किया कि मुझे साधु बनना है। यह निश्चय उस दिन मैंने मध्यान्ह में किया था। निश्चय कर लेने के बाद दीक्षा की अनुमति लेने का प्रयास शुरू हुआ। मेरे संसारपक्षीय भ्राता सुजानमलजी बड़े समझदार और बुद्धिमान व्यक्ति हैं। मुनिश्री ने उन्हें प्रेरणा दी और मुझे शीघ्र दीक्षा की अनुमति के लिए उन्हें समझाया। उन्होंने स्वीकार कर लिया और कुछ ही समय में मेरी दीक्षा का होना निश्चित हो गया। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने इस बात की अनुमति प्रदान कर दी कि मुनि सुमेरमलजी 'लाडनूं' सरदारशहर में मुझे दीक्षा प्रदान करें।

मैं और मेरे एक साथी जिनका नाम हीरालालजी था, दोनों की दीक्षा सरदारशहर में होनी निश्चित हो गई। वे मेरे साथी हीरालालजी आज मुनिश्री उदितकुमारजी स्वामी के रूप में संघ को अपनी सेवाएं दे रहे हैं। मुनिश्री उदितकुमारजी स्वामी मेरे सहदीक्षित हैं और कह सकता हूं कि एक योग्य संत हैं। हमारे धर्मसंघ के युवा संतों में एक चिंतनशील, कर्मशील और अच्छा काम करने वाले संत हैं। विनयशील, बुद्धिमान और प्रतिभाशाली हैं, ऐसा मैं कह सकता हूं। इस प्रकार मुझे सहदीक्षित संत भी अच्छे मिले। हम कई वर्षों तक साथ रहे। बाद में गुरुदेव ने हम दोनों की दिशाएं अलग-अलग कर दी। मुझे अन्यत्र न्यारां में भेज दिया और आपको अलग रख दिया।

गुरुदेव तुलसी की मुझ पर पता नहीं कैसे कृपा हुई और उन्होंने मुझ पर विशेष ध्यान देना शुरू किया। मुझे न्यारां से गुरुकुलवास में रखा। मेरी ओर से गुरुदेव को कोई निवेदन नहीं था कि मुझे न्यारां से गुरुकुलवास में रखा जाए। मैंने तो दीक्षा के बाद यह तय कर लिया था कि गुरुदेव जहां रखेंगे, जिसके पास रखेंगे, वहीं रहना है। इस बारे में मैं अपनी ओर से कभी कोई आग्रह नहीं करूंगा। गुरुदेव की जहां मर्जी होगी रखेंगे। न्यारां के बाद जब गुरुदेव ने मुझे अपने पास रखने का निर्णय किया तो यह निर्णय गुरुदेव का अपना था। फिर तो एक लंबा क्रम चला गुरुकुलवास में रहने का। गुरुदेव की अमित वत्सलता मुझे प्राप्त होती चली गई।

गुरुदेव ने मुझे अपनी सेवा-परिचर्या में भी जोड़ा, इसलिए मैं उनके आसपास रहने लग गया। भ्रमण आदि करते समय वे बहुधा मेरे हाथ का सहारा लेते। शीघ्र ही मैं रात्रि में उनके पास ही शयन करने लग गया। यह आदेश मुझे तत्कालीन युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ के द्वारा मिला था कि तुम गुरुदेव के पास ही सोया करो। इस तरह मुझे परमपूज्य गुरुदेव तुलसी का सुखद सान्निध्य मिला। वे मुझे ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ाने का प्रयास करते, मेरा संघीय जीवन और अधिक उन्नत बने, इसका भी वे प्रयास करते।

वि.सं.२०४२ के उदयपुर मर्यादा महोत्सव के दिन गुरुदेव तुलसी ने मुझे जनता के बीच में खड़ा किया और युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ के आन्तरिक कार्यों में सहयोगी के रूप में मेरी नियुक्ति की। मेरे संघीय विकास की दृष्टि से वह नियुक्ति भी अपने आप में बड़ी महत्त्वपूर्ण थी। साध्वी यशोधराजी की भी संघीय व्यवस्थाओं के संदर्भ में उसी समय नियुक्ति हुई थी। संघीय कार्यों की दृष्टि से परमपूज्य महाप्रज्ञजी के साथ जुड़ने का वह मेरा प्रारंभिक काल था। वैसे पहले भी यत्किंचित कार्य करता था। बाद में धीरे-धीरे बहुत गहराई के साथ संघ के अंतरंग कार्यों में जुड़ता गया।

मैं उस दिन की भी स्मृति करना चाहूंगा, जब वि.सं. २०४३ में वैसाख शुक्ला चतुर्थी को गुरुदेव तुलसी

ने ब्यावर में मुझे साझपति बनाया था। वह दिन भी मेरे जीवन का विशिष्ट और महत्त्वपूर्ण दिन था, जब छोटी-सी वय में गुरुकुलवास में मुझे साझ का अग्रणी बनाया गया। उस समय मैं चौबीसवें वर्ष में था, जब साझ का अग्रणी बना। उससे मुझे कार्य में काफी सुविधा हो गई।

लाडनूं में योगक्षेम वर्ष मनाया जा रहा था तो उस दौरान गुरुदेव ने मुझे भरी परिषद के बीच खड़ा कर 'महाश्रमण' का पद दिया। इस संदर्भ में अपने द्वारा लिखा गया 'लिखत' उन्होंने स्वयं चतुर्विध धर्मसंघ के बीच पढ़कर सुनाया। उसी दिन, उसी समय साध्वीप्रमुखाजी को भी 'महाश्रमणी' का पद दिया।

संघ के स्थविर और वृद्ध संतों का भी मुझे वात्सल्य मिला। मुनि डूंगरमलजी स्वामी, मुनि गणेशमलजी स्वामी आदि संतों की वत्सलता पाने का भी सुयोग मिला। गुरुदेव तुलसी का महाप्रयाण होने के बाद आचार्य महाप्रज्ञजी के साथ मुझे खुलकर काम करने का मौका मिला। शीघ्र ही उन्होंने व्यवस्था भी कर दी। गुरुदेव के महाप्रयाण के बाद उन्होंने घोषणा की थी कि शीघ्र ही संघ की व्यवस्था करने का चिंतन किया है और तिथि की घोषणा करते हुए कहा था कि भाद्रव शुक्ला बारस को भावी उत्तराधिकारी की नियुक्ति करूंगा। वि.सं.२०५४ को भाद्रव शुक्ला बारस के दिन गंगाशहर में विराट उपस्थिति के बीच गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने मुझे अपना उत्तराधिकारी घोषित किया और अपने करकमलों से युवाचार्य के रूप में मुझे विधिवत अपनी चद्दर ओढ़ाई।

युवाचार्य के पद पर प्रतिष्ठित हो जाने के बाद मैं परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ गया। उनके कार्यों में हाथ तो पहले से ही बंटाता था, लेकिन युवाचार्य बन जाने के बाद मेरा दायित्व और ज्यादा बढ़ गया, दूसरे शब्दों में कहूं तो काम करने की दृष्टि से मुझे मुक्त आकाश मिल गया। कुछ काम मैंने स्वयं ले लिया और कुछ काम गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने दे दिया होगा। उन्होंने मुझे काम करने का बहुत अवसर प्रदान किया। इस तरह दो-दो महान गुरुओं के साये में रहने और उनसे सीखने-जानने और कार्य करने का मुझे अवसर मिला।

यों तो श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री से भी बहुत सीखने-पढ़ने का अवसर मिला है। आपने मुझे बाल्यकाल में संभाला है, प्रेरणा प्रदान की है, मुझे दीक्षित और शिक्षित किया है और इस दृष्टि से मुझ पर आपका उपकार है। मुनिश्री उदितकुमारजी स्वामी पर भी है और बाद में मुनि अनंतकुमारजी पर भी। जाने-अनजाने आपने ऐसे विशेष संघीय संस्कार भरे, जो हमारे जीवन-निर्माण में और विकास में बहुत सहायक बने।

जीवन के पचास वर्ष मैंने संपन्न कर लिए। इस उपलक्ष्य में संघ ने अमृत महोत्सव मनाया है। सरदारशहर में साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी का आग्रह और निवेदन रहा, जिसे मैं अस्वीकार नहीं कर सका। वैसे मैं जन्मदिवस आदि को महत्त्व नहीं देता। जन्मदिवस में ऐसी क्या खास बात? जन्म तो आपने भी लिया और मैंने भी लिया। इस प्रकार जन्म की दृष्टि से तो सब एक समान हैं, इसलिए किसी के जन्मदिवस को विशिष्टता दी जाए, इसे मैं महत्त्व नहीं देता। लेकिन मैंने धर्मसंघ की भावना को अस्वीकार नहीं किया और अमृत महोत्सव मनाया गया। हालांकि में इस बात की अनुमोदना करूंगा कि इस वर्ष में जो कार्य हुआ है, वह बहुत महत्त्वपूर्ण है। अमृत महोत्सव को निमित्त बनाकर ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य--इस पंचाचार की साधना की दृष्टि से जो कार्य हुआ, वह विशिष्ट है। ऐसे कार्य के प्रति संतोष व्यक्त किया जा सकता है और मुझे संतोष है।

मुनि कुमारश्रमण अमृत महोत्सव के प्रवक्ता हैं। इस दायित्व को इन्होंने अच्छी तरह निभाया। बहुत छोटी उम्र में ये मेरे पास आ गए थे। मेरा साझ बन जाने के बाद मुझे संतों का प्रायः अच्छा योग मिला। मुनि ऋषभकुमारजी को मेरा साझ बनते ही गुरुदेव तुलसी ने मेरे पास रखा। इनके रूप में एक सेवाभावी, साझ के अनेक कार्यों से निश्चिंत रखने वाला बड़ा कर्मठ साधु और आत्मीय भाव से सेवा करने वाला संत मुझे मिला। सबसे पहले मुनि ऋषभजी मिले, उसके बाद अनेक-अनेक साधु मेरे पास गुरुदेव ने दिए।

मुनि कुमारश्रमण तो छोटा-सा बच्चा था, तब गुरुदेव ने मुझे सौंपा था। एक बालमुनि के रूप में ये मेरे पास रहे। मैं सोचा करता था कि ये कब बड़े होंगे। अब तो ये बड़े चिंतनशील और कार्य करने वाले प्रबुद्ध मुनि के रूप में मेरे पास हैं। इनके बाद मुनि कीर्ति, मुनि विश्रुत आदि संत मुझे मिले, जिनका मुझे बड़ा सहयोग मिला। ये तो मैंने मेरे निकट रहनेवाले कुछ संतों के नाम लिए। न जाने कितने-कितने संतों का मुझे योग मिला। शासन गौरव मुनि मधुकरजी स्वामी के साथ रहने का मुझे अवसर मिला। वे कितने संघनिष्ठ और संस्कार देने वाले संत थे, और भी अनेक मुनियों का निकट सान्निध्य मुझे मिला।

एक समय वह था जब मैं बाल्यकाल में वैरागी के रूप में साध्वीप्रमुखाजी के सामने आया था। फिर दीक्षा के बाद शैक्ष मुनि के रूप में आया और आपके पास बैठकर प्रातराश लिया करता था। गुरुदेव की कृपा हुई और एक दिन वह भी आया, जब गुरुदेव तुलसी ने आपको 'महाश्रमणी' और मुझे 'महाश्रमण' बनाकर एक दृष्टि से समान बना दिया। गुरुदेव तुलसी कभी-कभी फरमाते--तुम लोग (मैं और साध्वीप्रमुखाजी) आपस में मिला करो और बातचीत किया करो।' बाद में मैं जब युवाचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हो गया तो गुरुदेव महाप्रज्ञ के सान्निध्य में संघीय कार्यों की दृष्टि से कितनी ही गोष्ठियों में भाग लेने का अवसर मिलने लगा।

परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी के महाप्रयाण के बाद जब संघ का संपूर्ण दायित्व स्वाभाविक रूप से मुझ पर आया तो अब प्रायः यदा-कदा साध्वीप्रमुखाजी से विचार-विमर्श होता रहता है। पहले तो परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी के साये में ही आपसे काम पड़ता था, अब प्रत्यक्ष रूप से काम पड़ता है। कह सकता हूं कि साध्वीप्रमुखाजी से मुझे बहुत सहयोग मिल रहा है। लम्बे समय से साध्वीप्रमुखा के रूप में संघ को आपकी बहुमूल्य सेवाएं मिल रही हैं और आपका लंबा प्रशासकीय अनुभव भी है। गुरुदेव तुलसी के पावन साये में रहकर आपने काम किया, फिर आचार्य महाप्रज्ञ के साये में और अब हमारे पास कार्य करने का अवसर आपको मिल रहा है। इसे एक बड़ा सुयोग ही कहूंगा कि ऐसी साध्वीप्रमुखा हमें प्राप्त हैं। हमारा विशाल साध्वी समाज है और इसकी व्यवस्था में हमें साध्वीप्रमुखाजी का परामर्श प्राप्त होता रहा है। कभी-कभी तो ऐसी बातें, जो हमारे दिमाग में नहीं रहती, साध्वीप्रमुखाजी से उनके बारे में परामर्श मिल जाता है। जो कल्पना मेरे दिमाग में नहीं आती, वह साध्वीप्रमुखाजी के द्वारा मुझे मिल जाती है।

गुरुदेव महाप्रज्ञजी जब युवाचार्य और आचार्य के रूप में थे, तब साध्वी विश्रुतविभाजी उनकी सन्निधि में बैठा करती थी। उस समय आचार्यश्री के द्वारा जो शिक्षण-प्रशिक्षण मिलता, उसमें हम दोनों सहभागी रहते। इस तरह संपर्क तो पहले से ही था, लेकिन बाद में जब इन्हें मुख्यनियोजिका बनाया गया तो प्रशासनिक दृष्टि से अनेक बार इनसे काम पड़ने लगा। मुख्यनियोजिकाजी प्रबुद्ध हैं, चिंतनशील हैं। प्रबुद्ध और चिंतनशील होना एक बात है, लेकिन इसके साथ-साथ ये विनीत और समर्पित भी हैं। विनम्रता का गुण न हो तो प्रबुद्धता के आगे प्रश्नचिह्न लग सकता है। समणियों की व्यवस्था आदि में मुझे इनका सहयोग मिलता है।

जीवन में मुझे अनेक स्थितियों को भी देखने का मौका मिला। कुछ गलतियां और भूलें भी हुईं, प्रमाद हुआ और ठोकरें भी खाईं, लेकिन उन ठोकरों को खाकर पुनः संभलने और आगे बढ़ने का भी अवसर मिला। इस तरह अब तक के जीवन में अनेक खट्टे-मीठे अनुभव प्राप्त किए। जीवन है तो तरह-तरह की स्थितियों/परिस्थितियों को देखने और उनसे रू-ब-रू होने का मौका मिलता है। आज जीवन के पचास वर्ष संपन्न कर इक्यावनवें वर्ष में प्रवेश कर रहा हूं तो गत जीवन पर विहंगावलोकन करते समय अनेक बातें स्मृति में आ रही हैं।

धर्मसंघ ने मेरे पचास वर्ष की संपन्नता के वर्ष को अमृत महोत्सव वर्ष के रूप में मनाया। न केवल तेरापंथ अपितु इतर समाज के लोगों की भी श्रद्धा भावना देखने को मिलती है। इसे मैं सबकी प्रमोद भावना ही कहूंगा। मैं तो उनके प्रति भी मंगलभाव व्यक्त करना चाहूंगा जो जैन या तेरापंथी

नहीं हैं, फिर भी मेरे प्रति सम्मान और श्रद्धाभाव रखते हैं। तेरापंथ तो खैर मेरा शासन, मेरा परिवार है ही। शासन के साधु-साध्वियों, समणियों तथा श्रावक-श्राविकाओं ने श्रद्धाभाव और समर्पण भाव इस अवसर पर व्यक्त किया है, उन सबके प्रति भी मैं रिटर्न मंगलकामना व्यक्त करना चाहूंगा। ऐसे अच्छे धर्मसंघ का मिलना भी भाग्य की बात है।

अमृत महोत्सव का यह चतुर्थ चरण जो बालोतरा में आयोजित हुआ, यह सप्तदिवसीय कार्यक्रम काफी सरस रहा, ऐसा कहा जा सकता है। मुझे आत्मतोष है कि मुझे जीवन में कुछ आगे बढ़ने का मौका मिला। पचास वर्ष की संपन्नता के इस अवसर पर मैं अपने प्रति शुभाशंसा करता हूं कि जीवन में आगे भी अच्छे काम करने के अवसर प्राप्त होते रहें और अध्यात्म की दृष्टि से मैं आगे बढ़ता जाऊं। मैंने अपने जीवन में कुछ आदर्श सोचे और यथासंभव जीवन में उनके अनुरूप चलने का प्रयास भी किया। साधु-साध्वियों, समणियों और श्रावक समाज ने गीत और वक्तव्य के माध्यम से अपनी भावनाएं रखीं। मैं सबकी मंगलभावनाओं को स्वीकार करता हूं।

आज प्रातः उठते ही सबसे पहले मैं मंत्री मुनिश्री के पास गया। सोचा इससे पहले कि लोग मेरे पास आएं, मुझे मंत्री मुनिश्री के पास जाना चाहिए। मैं आपके पास गया और वंदना की। मेरी कामना है कि लंबे काल तक आपका सामीप्य और परामर्श मिलता रहे।

साध्वीप्रमुखाजी अवस्था में मुझसे बहुत बड़ी हैं। जब मेरा जन्म हुआ, उससे पहले आप दीक्षा लेकर साध्वी बन चुकी थीं और जैसा कि मैंने कहा--दीक्षा के बाद बाल मुनि के रूप में मैं आपके सामने रहा और आपसे वात्सल्य पाया। आज इस अवसर पर मेरी कामना है कि साध्वीप्रमुखाजी का भी यथापेक्षा परामर्श और सहयोग लंबे काल तक मुझे मिलता रहे। अपने सभी रत्नाधिक मुनियों को भी इस अवसर पर मैं बड़े सम्मान के साथ स्मरण कर रहा हूं। सभी रत्नाधिक मुनियों का अहोभाव भी मुझ पर बना रहे। सभी छोटे मुनियों, साध्वियों तथा श्रावक-श्राविका समाज का समर्पित आध्यात्मिक सहयोग भी मुझे प्राप्त होता रहे, यह मंगलकामना व्यक्त करता हूं।”

ije J); vkpk;Jh egkJe.k ckykrjk e

ulxfjd vfHkunu

„… viyA नगरपालिका एवं स्थानीय संस्थाओं की ओर से परमपूज्य आचार्यप्रवर के नागरिक अभिनंदन समारोह का आयोजन। कार्यक्रम में प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री देवराज खींवसरा, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री शान्तिलाल डागा, प्रतापगढ़ के अतिरिक्त कलक्टर श्री ओ.पी.जैन, महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती विमला गोलेच्छा, तेयुप के अध्यक्ष श्री ललित जीरावला, श्री राजेश खींवसरा, प्रवास व्यवस्था समिति के मंत्री श्री शांतिलाल ‘शान्त’, श्री शिवकुमार ढेलड़िया, श्री पारसमल गोलेच्छा, श्री प्रकाश श्रीश्रीमाल एवं श्री महावीर गोलेच्छा ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। महिला मंडल की बहनों एवं तेयुप के युवकों ने गीत का सामूहिक संगान किया। साध्वी संकल्पप्रभाजी एवं समणी मानसप्रज्ञाजी ने अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। गत दिनों गुरुदर्शन करने वाली साध्वियों ने भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किया।

दिल्ली चतुर्मास संपन्न कर मुनि जयकुमारजी ने आज पूज्यवर के दर्शन किए। उन्होंने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त करते हुए गुरुचरणों में रहने की प्रार्थना की तथा अपने सहवर्ती मुनि रोहितकुमारजी एवं मुनि मुदितकमारजी के साथ गीत के माध्यम से अपनी प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दी। मुनि जयकुमारजी द्वारा गुरुकुलवास में साथ रखने की प्रार्थना पर आचार्यवर ने ‘तथास्तु’ कहकर अपनी स्वीकृति प्रदान की। ईडवा चतुर्मास संपन्न कर साध्वी सरस्वतीजी ने भी आज गुरुदर्शन किए तथा अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त

करते हुए सहवर्तिनी साध्वियों के साथ गीत के माध्यम से अपने आन्तरिक उल्लास को प्रस्तुति दी। साध्वी चांदकुमारीजी (लाडनूं), साध्वी गुलाबांजी (सरदारशहर), साध्वी कमलप्रभाजी (लाडनूं), साध्वी कमलश्रीजी (टमकोर), साध्वी यशोधराजी, साध्वी सरस्वतीजी एवं साध्वी तिलकश्रीजी के सिंघाड़ों की ओर से रजोहरण, प्रमार्जनी, धर्मोपकरण व अन्य उपयोगी सामग्री गुरु चरणों में भेंट की गई। भेंट का यह क्रम नयनाभिराम एवं दर्शनीय था।

बाड़मेर के विधायक श्री मेवाराम जैन ने कहा--‘आज के विषाक्त वातावरण में आचार्य महाश्रमण के उपदेश जन-जन तक पहुंचने चाहिए। आपके प्रवास से इस क्षेत्र में खुशहाली आएगी।’

बाड़मेर-जैसलमेर के सांसद श्री हरीश चौधरी ने कहा--‘आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत का सन्देश पूरे विश्व के लिए उपयोगी है। आचार्यश्री महाश्रमणजी के इस प्रवास से केवल बाड़मेर जिले को ही नहीं, पूरे विश्व को एक नई दिशा मिलेगी।’

बाड़मेर जिलाप्रमुख श्रीमती मदनकौर ने कहा--‘आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ के उपदेश-श्रवण का मौका मुझे कई बार मिला। आचार्य महाश्रमण देश की समस्याओं के समाधान के जो सूत्र दे रहे हैं, उन्हें आत्मसात् करें।’

जिलाधीश डा.वीणा प्रधान ने कहा--‘आचार्यश्री के बाड़मेर जिले में पदार्पण और प्रवास से धर्ममय वातावरण निर्मित हुआ है। आप और हम सबको इस प्रवास का पूरा लाभ उठाना है।’

राजस्थान के राजस्व मंत्री श्री हेमाराम चौधरी ने अपने वक्तव्य में कहा--‘संत का जीवन बहुत कठोर होता है। त्याग और तप की आंच से निर्मल बनने के कारण ही संत वंदनीय और पूजनीय होते हैं। समाज और राष्ट्र को उनसे मार्गदर्शन प्राप्त होता है। आचार्यश्री का यह प्रवास इस पूरे क्षेत्र में अमन-चैन की वृद्धि करेगा।’

नगरपालिकाध्यक्ष श्री महेश बी.चौहान ने समागत विशिष्ट महानुभावों, नगरपालिका के पार्षदों तथा नागरिक अभिनंदन समिति के संयोजक श्री पारसमलजी भंडारी के साथ परमपूज्य आचार्यवर को नागरिक अभिनंदन पत्र समर्पित किया। प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री देवराज खींवसरा व समिति के सदस्यों ने भी अभिनंदन पत्र समर्पित किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--‘प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ज्ञान और आचार का योग होना चाहिए। कोरा ज्ञान और कोरा आचार पर्याप्त नहीं है। आचार की परिपूर्णता तब होती है, जब ज्ञान सम्यक् हो जाए। सम्यक् ज्ञानयुक्त व्यक्ति का आचार सम्यक् हो सकता है। संतों का समागम व सान्निध्य ज्ञान प्राप्ति का अपूर्व और दुर्लभ अवसर होता है। भारतीय वाङ्मय में सत्संगति को महत्त्वपूर्ण माना गया है। संत वही, जिसके जीवन में ज्ञान और साधना की समन्विति हो। संतों के दर्शन से पाप पलायित होते हैं। वे लोग धन्य होते हैं, जिन्हें साधु-संगति प्राप्त होती है। वह ग्राम, नगर और क्षेत्र भी बड़भागी होता है, जहां संतों का आगमन और प्रवास होता है।’

नागरिक अभिनंदन के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--‘बालोतरा की जनता ने हमारा स्वागत किया। इसे मैं उनकी सद्भावना मानता हूं। यहां की जनता में मैत्री व अहिंसा की भावना का विकास हो। यहां के हर व्यक्ति के कार्यकलाप में नैतिकता प्रतिबिंबित हो और जीवन अध्यात्म से परिपूर्ण बने। बालोतरा बाड़मेर जिले का प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र है। यहां पूज्य गुरुदेव तुलसी ने मर्यादा महोत्सव और चतुर्मास किए। गुरुदेव महाप्रज्ञ अहिंसा यात्रा के साथ यहां पधारे थे। हम भी यहां लंबे प्रवास हेतु आए हैं। हमारा यह प्रवास इस क्षेत्र के लोगों के लिए शान्ति प्रदायक बने, सबमें अहिंसा का विकास हो, सभी संप्रदायों में सौमनस्य का भाव वृद्धिंगत हो, यह अभीप्सा है। यहां अनेक जनप्रतिनिधि उपस्थित हैं। उनके जीवन में नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा एवं शुचिता बनी रहे।’

आचार्यवर ने आगे कहा--'आज मुनि जयकुमारजी आए हैं। इन्होंने परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी की बहुत सेवा की है। उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखते थे। व्यवहारकुशल और मृदु स्वभाव के हैं। इन्हें दिल्ली भेजा था, वहां अपने ढंग से काम किया, श्रावक समाज की संभाल की। गुरुदेव तुलसी के जन्मशताब्दी समारोह व अणुव्रत की दृष्टि से विशिष्ट लोगों से सम्पर्क किया। अब हमारे पास आ गए हैं। यहां भी यथासंभव अच्छा कार्य करें और हमारे साथ जसोल चतुर्मास करें। मुनि रोहितकुमारजी का गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने 'हनुमान' के रूप में उल्लेख किया था। मुनि मुदितकुमारजी बीदासर के अच्छे संत हैं। साध्वी सरस्वतीजी शासनश्री मुनिश्री राजेन्द्रकुमारजी स्वामी की संसारपक्षीया भगिनी हैं। गुरुदेव फरमाते--साध्वी सरस्वती अच्छा काम करने वाली साध्वी है। इनको स्वास्थ्य ठीक रखना है और अस्वास्थ्य को 'वोसिरे-वोसिरे' करना है। साध्वी चांदकुमारीजी (लाडनूं), साध्वी तिलकश्रीजी, साध्वी गुलाबांजी (सरदारशहर) एवं साध्वी कमलप्रभाजी (लाडनूं) से गुरुदेव महाप्रज्ञ के महाप्रयाण के बाद पहली बार मिलना हुआ है। सभी साध्वियों में चित्तसमाधि रहे। साध्वियां आती हैं तो साथ में भेंट आदि लाती हैं। उपकरणों आदि का श्रमपूर्वक निर्माण करती हैं। सभी साध्वियां अच्छा काम करें।' कार्यक्रम का संचालन ओमप्रकाश बांठिया ने किया। पंडाल जनाकीर्ण था।

i{kk ijLdkj lei.k lekjkg

आज रात्रि में आचार्यवर की पावन सन्निधि में मोहनलाल कठोतिया सेवा कोष की ओर से बायोमेडिकल इंजीनियर, प्रेक्षा प्रशिक्षक युवकरत्न डा.जी.एल.जैन (उदयपुर) को 'प्रेक्षा पुरस्कार-२०११ ' प्रदान किया गया। युवकरत्न श्री बजरंग जैन (राजगढ़-बेंगलुरु) ने पुरस्कार प्रायोजक मोहनलाल कठोतिया सेवा कोष के विषय में अवगति दी और पुरस्कार प्राप्तकर्ता डा.जी.एल.जैन का परिचय प्रस्तुत करते हुए सम्मानपत्र और पुरस्कार राशि का चैक डॉ. जैन को समर्पित किया।

डॉ. जी. एल. जैन ने अपने स्वीकृति भाषण में प्रेक्षाध्यान को ध्यान की महत्त्वपूर्ण प्रविधि बताते हुए कहा--'इस पुरस्कार को प्राप्त करने के बाद कर्तव्य और दायित्व की दृष्टि से मैं स्वयं को और अधिक आबद्ध महसूस कर रहा हूं।'

केन्द्रीय जीवनविज्ञान अकादमी द्वारा आयोजित तथा माणकचन्द शान्ता संघवी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रायोजित 'जीवनविज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिता २०११' के विशिष्ट स्थान प्राप्तकर्ताओं को विभिन्न पुरस्कार वितरित किए गए। बीकानेर जिला उद्योग केन्द्र के महाप्रबंधक श्री राजेन्द्र सेठिया ने प्रतियोगिता के संदर्भ में जानकारी दी। प्रतियोगिता में २००८ भाई-बहनों ने भाग लिया। इसमें प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर क्रमशः मोनिका छाजेड़ (लूणकरणसर), नेहा चौपड़ा (जसोल) व सीमा कोठारी (मुम्बई) रहे। सात सांन्त्वना व सौ प्रोत्साहन पुरस्कार भी प्रदान किए गए। इस अवसर पर शासनश्री मुनि किशनलालजी, आगम मनीषी मुनि महेन्द्रकुमारजी एवं प्रेक्षा प्रभारी मुनि कुमारश्रमणजी के प्रासंगिक वक्तव्य हुए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'परमपूज्य गुरुदेव तुलसी व परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञ ने प्रेक्षाध्यान और जीवनविज्ञान का प्रकल्प प्रस्तुत किया। कितने-कितने लोग प्रेक्षाध्यान से संपृक्त हुए और लाभ प्राप्त किया। डा.जी.एल.जैन वर्षों से प्रेक्षाध्यान के साथ जुड़े हुए हैं। 'प्रेक्षा वर्ष' की समायोजना में इनका अच्छा श्रम रहा। इन्हें 'प्रेक्षा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। ये प्रेक्षाध्यान के प्रचार-प्रसार में अपनी पवित्र शक्ति का नियोजन करते रहें।

जीवनविज्ञान प्रतियोगिता में प्रतिभागियों द्वारा अच्छे अंक प्राप्त करना एक उपलब्धि है। जीवनविज्ञान कार्यक्रम विद्या संस्थानों से जुड़ा हुआ है। इसे प्रसारित करने का समुचित प्रयास होता रहे।' कार्यक्रम का संचालन श्री गौतम श्रीश्रीमाल ने किया।

v{k; rrh;k dk Hk0; vk;ktu

„† viyA अक्षय तृतीया का पावन अवसर। पूज्यप्रवर के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ। तेयुप के सदस्यों ने गीत का संगान किया। सिवांची-मालाणी की समणियों ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। समणी स्वर्णप्रज्ञाजी ने अपने प्रासंगिक विचार व्यक्त किए। प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री देवराज खींवसरा ने आगंतुक अतिथियों का स्वागत किया। आगम मनीषी मुनि महेन्द्रकुमारजी ने उपवास का वैज्ञानिक दृष्टि से विवेचन किया।

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'सुपात्र दान का प्रसंग इस अवसर्पिणी काल में आज के दिन प्रारंभ हुआ। आज का दिन भगवान ऋषभ के जीवन से जुड़ा हुआ है। उन्होंने नए युग का प्रवर्तन किया, सामाजिक, राजनीतिक व धार्मिक व्यवस्थाएं दीं। अक्षय तृतीया का दिन जीवन में सात्विकता एवं त्याग का संदेश देता है।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'तप की अग्नि में तपस्वी अपनी आत्मा को तपाकर कुन्दन बनाते हैं। इससे उनकी आत्मा कर्म-मल से रहित बनती है और मोक्ष के पथ पर अग्रसर होती है। हजारों-हजारों लोगों के लिए अक्षयतृतीया तप का हेतु बनती है। तपस्वी अपनी तपस्या के साथ सहजता, सरलता व मैत्री के संस्कारों को भी पुष्ट बनाते रहें।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जैन वाङ्मय में 'अक्खय' शब्द प्रयुक्त हुआ है। सिद्धि गति को अक्खय कहा गया है। सिद्धि गति स्थान ऐसा है, जो अक्षय है, सदा बना रहता है। जो सिद्ध रूप में चला गया, वह वापस नहीं आता। सिद्धों का ज्ञान अक्षय होता है। उनके पास अक्षय संपदा और अक्षय शक्ति होती है। हमारी साधना का लक्ष्य यह रहे कि अक्षय समृद्धि व अक्षय सिद्ध गति को प्राप्त करें। बैसाख शुक्ला तृतीया ऋषभ के साथ जुड़कर महत्त्वपूर्ण बन गई। जो तिथि महापुरुषों से जुड़ जाती है, उस तिथि का माहात्म्य बढ़ जाता है। कालान्तर में एक दिन उपवास व एक दिन भोजन के रूप में साधना का क्रम बना। इसके साथ एक निश्चित आचार-संहिता का परिपालन करना होता है। बाह्य तप के साथ आभ्यन्तर तप को भी जोड़ा जा सकता है। वर्षीतप की संज्ञा तो वर्ष भर किए जाने वाले एकान्तर उपवास को ही मिलनी चाहिए। एकान्तर एकासन व आयंबिल साधना है, अच्छा तप है।'

साधु-साध्वियों व समणश्रेणी द्वारा किए जा रहे वर्षीतप की सराहना करते हुए आचार्यवर ने कहा--'वर्षीतप के साथ सेवा, विहार तथा अन्य चर्यागत कार्य भी करते हैं। हमारे धर्मसंघ में तपस्या के प्रति आकर्षण बढ़ा है। तपस्या से कर्म-निर्जरा होती है, संयम पुष्ट होता है। वर्षीतप की अनुमोदना में गिफ्ट आदि लिया जाए या नहीं? भोज आदि किया जाए या नहीं? बड़ी संख्या में आइटम्स किए जाएं या नहीं ? इस पर विचार होना चाहिए। परिग्रह का जितना अल्पीकरण हो, वह धर्म है। तपस्या के साथ सेवा को भी मैं धर्म मानता हूं। साधु-साध्वियों को वृद्ध व रुग्ण साधु-साध्वियों की उपयुक्त रूप में अच्छी सेवा करनी चाहिए। सेवा हेतु कहीं भी जाना पड़े, उसके लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। समणश्रेणी में भी सेवा का संतोषजनक क्रम है, ऐसा कहा जा सकता है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'कई-कई साध्वियों में कितना वैदुष्य एवं बाहुश्रुत्य है। शासन गौरव साध्वी राजीमतीजी, साध्वी कनकश्रीजी बहुश्रुत परिषद की सदस्याएं हैं। उनमें वैदुष्य है। साध्वीप्रमुखाजी की तुलना मैं किसी के साथ नहीं करना चाहता, तुलना में नामोल्लेख भी नहीं करना चाहूंगा। मंत्री मुनिश्री जैसे बहुश्रुत, आगम मनीषी एवं बहुश्रुत परिषद के सदस्य मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी स्वामी विज्ञान एवं धर्म का तुलनात्मक अध्ययन करने वाले मुनि हैं। ऐसे विद्वान व गुरुकुलवास में रहने वाले संतों को भी सेवा में नियुक्त कर देते हैं। साध्वीप्रमुखाजी का नाम भी बगड़ी मर्यादा महोत्सव पर चाकरी में जुड़ा। हमारे यहां व्यक्ति गौण है, शासन की सेवा प्रमुख है।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आचार्यवर ने वर्षीतप करने वाले साधु-साध्वियों एवं समणियों को आलोयणा रूप में सात-सात घंटे आगम स्वाध्याय एवं भाई-बहनों को इक्यावन-इक्यावन सामायिक करने की प्रेरणा प्रदान की।

o"khrri % mYy[kuh; rF;

- आचार्यवर की पावन सन्निधि में मुनि राजकुमारजी ने सोलहवें, मुनि अजितकुमारजी ने दसवें एवं मुनि शांतिप्रियजी ने दूसरे वर्षीतप का पारणा किया। साध्वियों व समणियों में साध्वी संकल्पप्रभाजी एवं साध्वी गौरवयशाजी ने दूसरे, साध्वी हेमलताजी ने प्रथम, समणी ज्ञानप्रज्ञाजी, समणी आरोग्यप्रज्ञाजी, समणी स्वर्णप्रज्ञाजी ने भी वर्षीतप का पारणा किया। मुनि राजकुमारजी व मुनि अजितकुमारजी ने आगामी वर्ष में भी वर्षीतप जारी रखने का संकल्प स्वीकार किया। आचार्यवर से इक्षुरस का ग्रास पाकर सभी तपस्वी साधु-साध्वियां धन्यता का अनुभव कर रहे थे।
- गुरुकुलवास के अतिरिक्त जिन साधु-साध्वियों ने पारणे किए, उनके नाम प्राप्त सूची के अनुसार निम्नोक्त हैं--सेवाभावी मुनि जयचन्दलालजी (बारहवां), बहुश्रुत परिषद सदस्य मुनि राजकरणजी (सोलहवां), शासनश्री मुनि पूर्णानंदजी (चौबीसवां), मुनि मुनिव्रतजी (बारहवां), मुनि कमलकुमारजी (तैंतीसवां), मुनि श्रेयांसकुमारजी (चौथा), मुनि भूपेन्द्रकुमारजी (नौवां), मुनि ज्ञानेन्द्रकुमारजी (पहला), मुनि मोहविजयजी (इक्कीसवां), मुनि मानवमित्रजी का नौवां वर्षीतप है। वर्षीतप करने वाली साध्वियों एवं समणी के नाम इस प्रकार हैं--साध्वी मधुस्मिताजी (चौथा), साध्वी इलाकुमारीजी (छब्बीसवां), साध्वी मुक्तिप्रभाजी (चौदहवां), साध्वी श्रेष्ठप्रभाजी (दूसरा), साध्वी पूनमप्रभाजी, साध्वी विजयप्रभाजी (दूसरा), साध्वी कुसुमलताजी (दसवां), साध्वी शीलवतीजी (सोलहवां), साध्वी सहजयशाजी (पहला), साध्वी अमितरेखाजी (नौवां), साध्वी संयमप्रभाजी (पहला), साध्वी मृदुलाकुमारीजी (सातवां), साध्वी गुप्तिप्रभाजी (सातवां), साध्वी संकल्पप्रभाजी, साध्वी गौरवयशाजी (दूसरा), साध्वी हेमलताजी (पहला), समणी शीलप्रज्ञाजी (ग्यारहवां), समणी ज्ञानप्रज्ञाजी (दूसरा), समणी प्रांजलप्रज्ञाजी (दूसरा), समणी आरोग्यप्रज्ञाजी (दूसरा), समणी स्वर्णप्रज्ञाजी (पहला)
- इस महनीय प्रसंग पर बालोतरा में प्राप्त सूची के अनुसार परम पूज्यवर के पावन सान्निध्य में ४६७ तपस्वियों ने वर्षीतप का पारणा किया। तपस्वी भाई-बहन भगवानस्वरूप आचार्यवर को इक्षुरस का दान देकर अतिशय प्रसन्नता एवं कृतार्थता का अनुभव कर रहे थे। वर्षीतप का पारणा करने वालों में सर्वाधिक चालीस वर्षीतप करने वाली पचहत्तर वर्षीया तपस्विनी है--श्रीमती खम्मादेवी (धर्मपत्नी-श्री हस्तीमलजी बुरड़, बालोतरा)। पचीस व उससे अधिक वर्षीतप करने वाली अन्य तपस्विनी बहनें हैं--श्रीमती भागुदेवी भंवरलाल बैद मेहता (हुबली), श्रीमती पारसदेवी टीकमचन्द नाहटा (छापर), श्रीमती भंवरीदेवी घेवरचन्द गांधी मेहता (बालोतरा), श्रीमती अणचीदेवी चंदनमल छाजेड़ (बालोतरा) श्रीमती इचरजदेवी रामदेव डूंगरवाल, श्रीमती धापूदेवी भीकमचन्द गेलड़ा (शहादा), श्रीमती धर्मदेवी पुखराज तलेसरा, श्रीमती वरजूदेवी चंदनमल बालड, श्रीमती पानीदेवी रिखबचन्द बडेरा (बालोतरा), श्रीमती मांगीदेवी पुखराज बाना (सोजतरोड), श्रीमती लक्ष्मीदेवी जसकरण बैंगानी (बीदासर), श्रीमती सुआदेवी कस्तूरचन्द कोचर (फलसूंड)
- लगभग पांच सौ तपस्वी भाई-बहनों का नामोल्लेख गांव व वर्षीतप के साथ होना और उनका व्रत निपजाने का क्रम लगभग एक घंटे में सुचारु रूप से संपन्न हो गया। इस बार श्री राजेश खींवसरा ने सारा मेटर पहले से रेकॉर्ड कर लिया और उसे मंच के दोनों ओर विशाल एलईडी पर प्रदर्शित किया। यह क्रम काफी सफल माना गया।
- वर्षीतप करने वालों में सर्वाधिक ९६ वर्ष की केसरदेवी हीरालाल गोगड़ (शहादा) ने इस बार २२वां वर्षीतप संपन्न किया। सबसे छोटी उम्र (२१ वर्ष) की तपस्विनी रही कुमारी पूजा डोसी चोपड़ा (सुपुत्री-शांतिलालजी, जसोल)। इस कन्या ने उत्साह के साथ पहला वर्षीतप संपन्न किया। पारणा करने वालों में सर्वाधिक बालोतरा

के १७७ भाई-बहन थे। अन्य क्षेत्रों में पचपदरा के ३९, जसोल के ५२, असाढ़ा के १५, कनाना के ११, टापरा के १०, पारलू के १०, अहमदाबाद के २१ और फलसूंड के १० तपस्वी भाई-बहन थे। पारणा करने वालें में लगभग अस्सी प्रतिशत तपस्वी मारवाड़ के थे। असाढ़ा के शर्मा ब्राह्मण परिवार की बहन संतोषदेवी ने भी वर्षीतप किया।

● अक्षयतृतीया का कार्यक्रम आचार्य तुलसी उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं जीतमल हरीशकुमार प्राथमिक विद्यालय के संयुक्त प्रांगण में निर्मित लगभग सात हजार वर्गफीट में बने पंडाल में हुआ। पंडाल में तपस्वी भाई-बहनों के लिए पृथक छोटा मंच बना हुआ था। तपस्वियों के पारणा हेतु पचास हजार वर्गफीट का अलग से पंडाल बना था। भोजनशाला का पंडाल पैंसठ हजार वर्गफीट का था। व्यवस्था समिति के सूत्रों के अनुसार बीस हजार लोगों ने भोजन व्यवस्था का उपयोग किया। आवास हेतु स्थानीय व्यवस्था के साथ नाकोड़ा तीर्थ आदि में समुचित व्यवस्था की गई। बाहर के लगभग सात हजार लोग सहभागी बने।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव : सप्तदिवसीय कार्यक्रम का शुभारम्भ

„‡ viyA परम पावन आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आज से आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के चतुर्थ चरण के अंतर्गत सप्तदिवसीय कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम का विषय था 'राष्ट्र निर्माण में अणुव्रत की भूमिका।' कार्यक्रम के प्रारंभ में साध्वीवृन्द ने मंगल संगान किया। स्थानीय अणुव्रत समिति की ओर से श्री ओमप्रकाश बांठिया और प्रवास व्यवस्था समिति की ओर से उपमंत्री श्री महेन्द्र बैदमूथा ने आगंतुक अतिथियों का स्वागत किया। मुनि रजनीशकुमारजी एवं मुनि मधुरकुमारजी ने बालोतरा की ओर से आचार्यवर का अभिनंदन किया। साध्वी विशालयशाजी, साध्वी विमलप्रज्ञाजी, मुनि जितेन्द्रकुमारजी, मुनि नीरजकुमारजी एवं साध्वी यशोधराजी ने आचार्यवर की अभ्यर्थना करते हुए निर्धारित विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तर भारत के संघ प्रचारक श्री बजरंगलाल गुप्ता ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमण सहज, सरल और सौम्य व्यक्तित्व के धनी हैं। इस कारण हर व्यक्ति अनायास ही आपकी ओर आकृष्ट हो जाता है। आपके भीतर साधना और तपस्या का जो तेज है, वह जनता को आपके प्रति आस्थावान बना देता है। आपके द्वारा कहा गया एक-एक शब्द जीवन की दिशा बदलने वाला होता है। ऐसे महापुरुष के अमृत महोत्सव पर उपस्थित होकर मैं धन्यता की अनुभूति कर रहा हूं। आपके पावन निर्देशन में 'संयम ही जीवन है' का ध्येय वाक्य लेकर साठ वर्ष से निरंतर गतिमान अणुव्रत राष्ट्र ही नहीं, विश्व निर्माण के लिए अति महत्त्वपूर्ण आन्दोलन है।'

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह सुरेश भैया जोशी ने कहा--'वर्तमान कालखंड में जब महान विभूतियां अल्पसंख्य होती जा रही हैं, ऐसे में हम अत्यन्त सौभाग्यशाली हैं कि आचार्य महाश्रमण जैसी महाविभूति की सन्निधि में बैठने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है। एक सामान्य व्यक्ति भी आपके पास आकर जीवन की ओर देखने की दृष्टि प्राप्त कर लेता है। आपकी साधना, परिश्रम, पुरुषार्थ और समर्पण हम सबके लिए प्रेरक है। आपके मार्गदर्शन में प्रलंब काल तक हम लाभान्वित होते रहें।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'परमपूज्य गुरुदेव तुलसी का लोकहितकारी व मानव कल्याणकारी अवदान है--अणुव्रत। अणुव्रत के नियमों की सम्यक् अनुपालना हो तो राष्ट्र का सर्वांगीण विकास हो सकता है। अणुव्रत संयम की बात बताता है। पानी, बिजली तथा अन्य उपभोग्य पदार्थों का संयम हो तो राष्ट्र की बहुत सारी समस्याओं का समाधान स्वतः हो सकता है। अणुव्रत नैतिकता की बात करता है। अर्थार्जन और व्यवहार में नैतिकता रहे। काले धन का अभाव भारत को स्वस्थ राष्ट्र के रूप

में स्थापित कर सकता है। छह दशकों से अधिक समय से अणुव्रत आन्दोलन अपनी गति से गतिमान है। इतने लंबे समय तक किसी नैतिक आन्दोलन का जीवित रह पाना अपने आप में महत्त्वपूर्ण बात है। हम सभी इस आन्दोलन के द्वारा राष्ट्र के चारित्रिक उत्थान में अपना योगदान देते रहें।'

vfHkuo lkekf;d dk HkO; vu"Bku

„^ viyA आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के सप्तदिवसीय कार्यक्रम का दूसरा दिन। प्रातःकालीन कार्यक्रम में अभिनव सामायिक का भव्य अनुष्ठान समायोजित हुआ। इस अनुष्ठान से पूर्व टापरा तेरापंथ कन्यामंडल, साध्वी मंजुबालाजी, साध्वी हेमरेखाजी, साध्वी नंदिताश्रीजी, मुनि गौरवकुमारजी, समणी अमृतप्रज्ञाजी, अ.भा.तेयुप के सहमंत्री श्री हनुमानमल लूंकड़ आदि ने आचार्यवर की अभ्यर्थना में अपनी प्रस्तुतियां दीं।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने हजारों की संख्या में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को आठ कोटि की सामायिक का प्रत्याख्यान करवाया। इन अनुष्ठान के दौरान त्रिपदी वंदना, जप, ध्यान, स्वाध्याय, त्रिगुप्ति साधना, परमेष्ठी वंदना आदि उपक्रम पूज्यवर द्वारा संचालित हुए। खचाखच भरे भव्य प्रवचन पण्डाल में श्वेत चादर धारण किए हुए पुरुष वर्ग विशिष्ट दृश्य उपस्थित कर रहा था।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'सामायिक एक अनुष्ठान है। यह समता की साधना का प्रयोग है। साधु-साध्वियां जीवन भर के लिए सावद्य योगों का प्रत्याख्यान करते हैं। श्रावक-श्राविकाएं एक सामायिक स्वीकार करते समय एक मुहूर्त के लिए सावद्य योग का प्रत्याख्यान करते हैं। सावद्य का अर्थ होता है पाप सहित। सामायिक में मन, वचन और काया की पापयुक्त प्रवृत्ति का परित्याग किया जाता है।'

श्रावक-श्राविकाओं को प्रेरणा प्रदान करते हुए आचार्यवर ने कहा--'सामायिक में खाली नहीं बैठना चाहिए। उस समय तो जप, स्वाध्याय आदि के प्रयोग चलें। लौकिक पत्र-पत्रिकाएं, समाचार पत्र आदि का पठन-पाठन तथा व्यापार और गार्हस्थ्य से संबद्ध बातें उस दौरान न हों। विधिपूर्वक, ज्ञानपूर्वक और तन्मयतापूर्वक की गई सामायिक श्रेयस्कर होती है।'

nk egÙoi.k xFkk dk ykdki.k

„% viyA आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के सप्तदिवसीय आयोजन का तीसरा दिन। प्रातःकालीन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में दो महत्त्वपूर्ण ग्रंथमालाओं के अग्रिम पुष्पों का लोकार्पण समारोह आयोजित हुआ। उत्तराध्ययन और श्रीमद्भगवद्गीता पर परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा की गई प्रवचनमाला के अंतर्गत 'सुखी बनो' का अग्रिम खंड **^l iUu cuk*** तथा गुरुदेव तुलसी की आत्मकथा **^ejk thou % ejk n'ku*** के अन्तिम तीन खंडों का आज लोकार्पण हुआ।

कार्यक्रम में डा.महावीर गोलेच्छा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। साध्वीवृन्द द्वारा गीत प्रस्तुति के बाद मुनि हर्षलालजी, साध्वी संकल्पप्रभाजी, साध्वी अतुलयशाजी, साध्वी कमलश्रीजी, साध्वी संवेगश्रीजी, समणी मलयप्रज्ञाजी, समणी संचितप्रज्ञाजी ने पूज्यवर के अभिनंदन में अपने भावसुमन अर्पित किए। साध्वी सुनंदाश्रीजी आदि पन्द्रह साध्वियों ने आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा लिखित एवं संपादित पन्द्रह कृतियों पर आधारित रोचक गीत प्रस्तुत किया। साध्वी जिनप्रभाजी द्वारा 'संपन्न बनो' और 'मेरा जीवन : मेरा दर्शन' पर भावाभिव्यक्ति के पश्चात् साध्वीवृन्द ने समूह गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के प्रो.मांगीलाल बडेरा (निदेशक-सायंकालीन अध्ययन संस्थान) और प्राच्य विद्या शोध संस्थान के निदेशक श्री श्यामसिंह राजपुरोहित ने आचार्यप्रवर के प्रति अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त करते हुए दोनों महत्त्वपूर्ण ग्रंथों को विशिष्ट प्रेरणास्पद बताया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जे.एन.व्यास विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.भंवरसिंह राजपुरोहित ने अपने वक्तव्य में कहा--'मैं परम भाग्यशाली हूं कि आज आचार्य महाश्रमण जैसे महापुरुष के दर्शन प्राप्त हुए। मैं आपके सामने विद्यार्थी के रूप में आया हूं। हम पैसे लेकर ज्ञान बांटते हैं और आप निःस्वार्थ भाव से राष्ट्र निर्माण का कार्य कर रहे हैं। आपके साहित्य से हमें दूर बैठे ऊर्जा संप्रेषित होती रहेगी।'

मंत्री मुनिश्री ने पूज्यप्रवर की नवीन कृति 'संपन्न बनो' आचार्यप्रवर को लोकार्पण हेतु उपहृत की। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने तुलसी वाङ्मय के अंतर्गत आदर्श साहित्य संघ द्वारा प्रकाशित गुरुदेव तुलसी की आत्मकथा 'मेरा जीवन : मेरा दर्शन' के अन्तिम तीन खण्ड (भाग-२१, २२, २३) परमपूज्य आचार्यवर को समर्पित किए। पूज्य आचार्यवर ने प्रस्तुत ग्रंथों को प्रसन्नभाव से लोकार्पित किया।

गुरुदेव तुलसी की आत्मकथा की संपादिका महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'दो व्यक्ति समाज को दृष्टि दे सकते हैं--सन्त और साहित्यकार। जब एक ही व्यक्ति संत और साहित्यकार दोनों होता है तो वह और अधिक महत्त्वपूर्ण बन जाता है। परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अमृत महोत्सव में समाज और देश को कई साहित्यिक उपहार दिए। सुखी बनो, शिलान्यास धर्म का और रोज की एक सलाह के बाद आज 'संपन्न बनो' ग्रंथ सामने आया है। गीता जैसे महान काव्य और उत्तराध्ययन जैसे महान शास्त्र का मंथन कर आचार्यवर ने जनता के सामने जो नवनीत परोसा है, वह लोगों को आन्तरिक दृष्टि से संपन्न बनाने में सहायक हो सकेगा।'

महाश्रमणीजी ने आगे कहा--'परम पूज्य गुरुदेव तुलसी साहित्य के महासागर थे। उन्होंने विविध विधाओं और विविध भाषाओं में साहित्य का सृजन किया। उनके ग्रंथों में आत्मकथा जैसा उत्कृष्ट और अप्रतिम ग्रंथ हमारे हाथों में आया है। उनके जीवन और मन की प्रामाणिक अभिव्यक्ति उनकी आत्मकथा में प्राप्त होती है। बीसवीं सदी के तेरापंथ को उनकी आत्मकथा विराटता के साथ प्रस्तुति देती है। इस आत्मकथा से कितनी ही पीढ़ियों को मूल्यबोध और भावबोध मिलता रहेगा। उनके अनुभवों और अनुभूतियों पर आधारित यह एक दिलचस्प कहानी है, जिसके लेखन में तीस वर्ष का लम्बा समय लगा। इसे संपादित करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। बीस खण्ड पहले प्रकाश में आ चुके हैं और अब यह आखिरी किश्त (भाग २१-२३) आज प्रकाश में आई है। गुरुदेव तुलसी का चामत्कारिक व्यक्तित्व और करिश्माई कर्तृत्व इस आत्मकथा में मुखरित हो रहा है। आचार्यप्रवर के अमृत महोत्सव पर गुरुदेव की ओर से ये तीन खण्ड उपहार के रूप में हैं।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में जनमेदिनी को स्वाध्याय की प्रेरणा दी और गुरुदेव तुलसी की आत्मकथा के संदर्भ में कहा--'परमपूज्य महामना गुरुदेव तुलसी की आत्मकथा के अन्तिम तीन भाग आज साध्वीप्रमुखाजी ने उपहृत किए। जिनकी आत्मकथा तेईस भागों में आई हो, ऐसे महापुरुष संभवतः नहीं, अथवा कम मिलेंगे। गुरुदेव प्रायः सायं डायरी लेखन किया करते थे। दिन भर की अपनी स्थिति, अपना आकलन, विभिन्न घटना-प्रसंग और अपने विचार वे डायरी में उल्लिखित कर लेते। वर्षों-वर्षों तक उनका यह क्रम चला। उनका यह लेखन एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज बन गया। इस आत्मकथा से पाठक को केवल जानकारी ही नहीं, सुन्दर पथदर्शन भी प्राप्त हो सकता है। साध्वीप्रमुखाजी ने इस आत्मकथा का संपादन कर एक महत्त्वपूर्ण कार्य किया और जनता के सामने एक पठनीय सामग्री प्रस्तुत कर दी। साध्वीप्रमुखाजी की साहित्यिक क्षेत्र में विशिष्ट प्रगति है और वर्षों से ये लेखन कार्य में लगी हुई हैं। आत्मकथा का संपादन कर आपने तेरापंथ धर्मसंघ को तो आभारी बनाया ही है, और भी कितने पाठक आभारी बन सकेंगे। हमारे संघ की भविष्य में आने वाली पीढ़ियां इस आत्मकथा से लाभान्वित हो सकेंगी। साध्वीप्रमुखाजी बहुत ही बधाई और साधुवाद की पात्र हैं इस बात के लिए कि दीर्घकाल तक मनोयोग अध्यवसायपूर्वक श्रम कर

कार्य को निष्ठा तक पहुंचा दिया। एक बार गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने इसी ग्रंथमाला के संदर्भ में फरमाया था कि यह श्रमसाध्य कार्य करके साध्वीप्रमुखा अमर बन गई।'

अपनी नवीन कृति 'संपन्न बनो' के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'एक ग्रंथ और आज लोकार्पित हुआ--संपन्न बनो। यह श्रीमद्‌भगवद्‌गीता और उत्तराध्ययन पर मेरी प्रवचनमाला का संकलन है, जिसका संपादन साध्वी सुमतिप्रभा ने किया है। पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने सन् २००९ को जैन विश्वभारती में मुझे फरमाया--'महाश्रमण! तुम गीता पर कुछ काम करो। गुरुदेव तुलसी ने मुझे इस कार्य के लिए इंगित किया था कि तुम्हें यह कार्य करना है, किन्तु मेरे लिए अब कठिन है। इसलिए अब तुम यह कार्य करो।'

मैंने गुरुदेव महाप्रज्ञ के इंगित को बड़ी श्रद्धा और सम्मान की भावना के साथ क्रियान्वित करने का प्रयास किया। श्रीमद्‌भागवद्‌गीता और उत्तराध्ययन पर लंबे समय तक व्याख्यान दिया। मुझे इस बात का आत्मतोष है कि गुरुदेव ने जो कार्य मुझे सौंपा था, मैंने यथासंभव उस कार्य को पूरा किया और वह कुछ अंशों में जनता के सामने आ गया। उस प्रवचनमाला का प्रथम भाग 'सुखी बनो' के रूप में आया था। आज यह दूसरा भाग 'संपन्न बनो' लोकार्पित हुआ। मैं साध्वी सुमतिप्रभा को साधुवाद देना चाहूंगा कि उसने एक बीड़ा उठाया और श्रमपूर्वक इस प्रवचनमाला का संपादन कार्य किया। संपादन कार्य में मेरा पथदर्शन उसे प्रायः प्राप्त नहीं हुआ। अपने ढंग से ही उसने श्रम किया, संपादन किया। यह वर्षों से मेरे साहित्य के संपादन कार्य में संलग्न है। मुझे तो ऐसा लगता है कि उसने अपने जीवन का एक मिशन बना लिया है कि मुझे आचार्यश्री के साहित्य के संपादन में अपनी शक्ति का नियोजन करना है। मैंने देखा कि निष्ठा के साथ इस कार्य में वह लगी हुई है और मेरा अनुमान है कि उसके ज्ञान का और भाषा का विकास भी हुआ है। वह और अधिक विकास करती रहे।' पूज्यप्रवर ने साधु-साध्वियों को आगम स्वाध्याय की प्रेरणा भी प्रदान की तथा अपनी सन्निधि में आगम कार्य करनेवाली मुख्यनियोजिकाजी, साध्वी जिनप्रभाजी, साध्वी श्रुतयशाजी, साध्वी मुदितयशाजी और साध्वी शुभ्रयशाजी का नामोल्लेख भी किया।

गीत गायन एवं भाषण प्रतियोगिता का समायोजन

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अभातेयुप द्वारा देश भर में आयोजित गीत गायन एवं भाषण प्रतियोगिता का फाइनल राउण्ड आज रात्रि में पूज्यवर की पावन सन्निधि में समायोजित हुआ। प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार हैं--

प्रतियोगिता	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
भाषण प्रतियोगिता	पूजा एम.ओस्तवाल	शिल्पा गांधी मेहता	सीमा सालेचा
गीत गायन प्रतियोगिता	खुशबू भंण्डारी	प्रकाश श्रीश्रीमाल	मीना बालड़

वर्धापना अमृत पुरुष की

„Š viyA आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के सप्तदिवसीय कार्यक्रम का चौथा दिन। आज का प्रातःकालीन कार्यक्रम वर्धापना समारोह के रूप में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में बालोतरा तेरापंथ कन्यामंडल, रोहित गोलेच्छा, मुमुक्षु प्रांजल, शासनश्री मुनि राजेन्द्रकुमारजी, मुनि विमलकुमारजी, मुनि पृथ्वीराजजी, मुनि मदनकुमारजी, मुनि कोमलकुमारजी, मुनि यशवंतकुमारजी, मुनि अभिजितकुमारजी, मुनि सुबोधकुमारजी, साध्वी कमलप्रभाजी (लाडनूं), साध्वी मंजुलाश्रीजी, साध्वी सरस्वतीजी, साध्वी निर्मलप्रभाजी, साध्वी ऋजुयशाजी, साध्वी तरुणप्रभाजी, साध्वी नंदिताश्रीजी, साध्वी महिमाश्रीजी, साध्वी ललितकलाजी, समणी अक्षयप्रज्ञाजी, समणी निर्मलप्रज्ञाजी और समणी समीक्षाप्रज्ञाजी ने अपने आराध्य को वर्धापित किया। अभातेयुप के संगठन

मंत्री श्री राजेश सुराणा ने आचार्यवर का अभिनंदन करते हुए आगामी १७ सितम्बर को देश भर में समायोज्य विशाल रक्तदान शिविर के बारे में अवगति दी और अधिकाधिक लोगों को इस उपक्रम से जुड़ने का आह्वान किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने जीवन की अनित्यता पर अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए जनता को प्रमाद से बचने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यवर ने अमृत महोत्सव वर्ष में आयोजित कार्यक्रमों को व्यवस्थित और सुन्दर बताते हुए वर्ष भर में हुए रचनात्मक कार्यों की श्लाघा की तथा प्रस्तुति देने वाले साधु-साध्वियों के प्रति आध्यात्मिक मंगलभावना अभिव्यक्त की।

okn&fookn ifr;kfxrk dk lek;ktu

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में अ.भा.तेरापंथ महिला मण्डल द्वारा समायोजित प्रतियोगिता का फाइनल राउण्ड आज मध्याह्न में मुख्यनियोजिका के उपपात में आयोजित हुआ। प्रतियोगिता का विषय था 'क्या प्रामाणिकता से सफलता पाई जा सकती है?' इस प्रतियोगिता में २६ प्रतियोगी संभागी बने। परिणाम इस प्रकार रहे--

iFke	**f}rh;**	**rrh;**
जयश्री बड़ोला, मुम्बई	तरुणा बोहरा, मुम्बई	रीमा दूगड़, जयपुर मुस्कान बरड़िया, श्रीडूंगरगढ़

dfo lEeyu dk xfjeki.k lek;ktu

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव पर बालोतरा में समायोजित सप्तदिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत आज रात्रि में पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में कवि सम्मेलन का गरिमापूर्ण समायोजन हुआ। इस कवि सम्मेलन में विशेष रूप से समागत श्री प्रताप फौजदार, श्री राजेश चेतन, श्री शहनाज हिन्दुस्तानी एवं श्री चिराग जैन ने आचार्यवर के प्रति अपनी मंगलभावना व्यक्त करते हुए युगीन समस्याओं पर काव्यात्मक कटाक्ष किए। रात्रि में लगभग बारह बजे तक श्रोताओं की विराट उपस्थिति में चले इस कवि सम्मेलन में गृहस्थ कवियों के अतिरिक्त मुनि जयकुमारजी, मुनि हिमांशुकुमारजी एवं मुनि विश्रुतकुमारजी ने भी अपनी काव्य प्रस्तुति दी। मुनि कुमारश्रमणजी ने कुशल संचालन करते हुए जनता को काव्य रस में सराबोर कर दिया।

vfHkonuk dUnh; lLFkkvk }kjk

„‹ viyA अमृत महोत्सव के सप्तदिवसीय कार्यक्रम का पांचवां दिन। वर्धापना समारोह का आयोजन। कार्यक्रम में समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी, महिला मंडल की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती सायर बैंगानी, श्री भोजराज बैद, मुम्बई भाजपा के अध्यक्ष श्री राज के. पुरोहित, श्री गौतम श्रीश्रीमाल, श्री पुखराज तलेसरा, मुनि महावीरकुमारजी, मुनि मननकुमारजी, मुनि विजयकुमारजी एवं स्थानीय तेयुप के सदस्यों ने पूज्यवर की वर्धापना में गीत, कविता, वक्तव्य आदि प्रस्तुत किए। स्थानीय महिला मंडल की बहनों से सामूहिक गीत की आकर्षक प्रस्तुति देते हुए विविध संकल्पों की सौगात के साथ संकल्प कलश भेंट किया। मुमुक्षु जय (वाव) ने अपने वक्तव्य में संयम की महत्ता प्रतिपादित करते हुए दीक्षा की प्रार्थना की। पूज्य आचार्यवर ने अत्यन्त कृपा कर २१ जून को पचपदरा में उसे मुनि दीक्षा देने की घोषणा की।

संस्थागत अभिवंदना के क्रम में तेरापंथ विकास परिषद के महामंत्री श्री संपत नाहटा ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया और केन्द्रीय संस्थाओं के उपस्थित पदाधिकारियों के साथ उसे अमृत पुरुष को उपहृत

किया। जय तुलसी फाउंडेशन के प्रबंध न्यासी श्री सुरेन्द्र दूगड़, तेरापंथी महासभा के महामंत्री श्री विनोद चोरड़िया, अभातेयुप के उपाध्यक्ष श्री अविनाश नाहर ने पूज्यवर की अभिवंदना में अभिनंदन पत्र भेंट किया। महिला मंडल ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया और राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती सूरज बरड़िया ने अमृत महोत्सव अभ्यर्थना के संदर्भ में बहनों द्वारा स्वीकृत चौदह नियमों की चर्चा की। टी.पी.एफ. अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सामसुखा, पा.शिक्षण संस्था के अध्यक्ष श्री चंपकभाई मेहता, अणुव्रत महासमिति के महामंत्री श्री संपत सामसुखा, अणुव्रत विश्वभारती के अध्यक्ष श्री तेजकरण सुराणा, राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान के अध्यक्ष श्री भीखमचन्द नखत, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष श्री जसकरण चौपड़ा, प्रेक्षा विश्वभारती के अध्यक्ष श्री बाबूलाल सेखानी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए अपनी विनयांजलि समर्पित की। अणुव्रत शिक्षक संसद द्वारा भरे गए तेईस राज्यों के पचास लाख नशामुक्ति के संकल्प पत्र श्रीचरणों में समर्पित किए गए। जैविभा मान्य विश्वविद्यालय की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी ने विश्वविद्यालय के अनुशास्ता की अभ्यर्थना करते हुए बताया कि अमृत महोत्सव वर्ष में इक्यावन विश्वविद्यालयों में जैनदर्शन पर व्याख्यानमाला आयोजित हुई।

आगम मनीषी मुनि महेन्द्रकुमारजी ने कहा--'अमृत महोत्सव उसी का मनाया जाता है, जो समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है। आचार्यश्री समस्या के समाधान में समर्थ हैं। आप आगे बढ़ें, पूरा संघ आपके साथ है।' संगायक श्री शहनाज हिन्दुस्तानी (केकड़ी) ने 'तुम्हारे पांव की धूलि मेरे माथे का चंदन है' गीत की प्रभावी प्रस्तुति दी।

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जो कार्य उपयुक्त है, उसे कल पर न छोड़ें। व्यर्थ में कालक्षेप नहीं करना चाहिए। कार्य करने वाले नाम व ख्याति की भावना से उपरत रहने का प्रयास करें। जीवनकाल सीमित है, इसलिए उसमें अच्छे कार्य करते रहना चाहिए। गुरुदेव तुलसी के जीवन के पचहत्तर वर्ष के उपलक्ष्य में प्रज्ञापर्व, योगक्षेम वर्ष का आयोजन हुआ। प्रशिक्षण का वह एक भारी भरकम कार्यक्रम था। उसकी प्लानिंग अच्छी थी और उसकी क्रियान्विति भी अच्छी रही। लगभग पूरे वर्ष भर वह कार्यक्रम चला।' आचार्यवर ने आगे कहा--'तेरापंथ समाज से संपृक्त संस्थाएं समाज की संपदा हैं। समाज की संस्थाओं में मेनपावर, मनीपावर, मेनेजमेंट पावर व मोरेलिटी पावर अपेक्षित रहता है। यदि कोई किसी संस्था हेतु अपना अनुदान घोषित करता है तो उसके यहां पदाधिकारी चक्कर लगाएं, यह कोई उत्तम बात नहीं है। घोषणा के बाद दानदाता को उस राशि के स्वामित्व का परित्याग कर देना चाहिए।

संस्था के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं में गुरुदृष्टि की आराधना में जो जागरूकता है, विनयशीलता व निष्ठा है, उस पर गौरव किया जा सकता है। अपने-अपने व्यवसाय में इतने व्यस्त रहते हुए भी संस्था हेतु कितना-कितना समय का नियोजन कर रहे हैं, यह महत्त्वपूर्ण बात है। कुछ व्यक्ति ऐसे तैयार हों जो संस्था के आध्यात्मिक हित में अधिक समय लगा सकें। कार्यकर्ताओं में आध्यात्मिक, नैतिक विकास हो। कार्यकर्ता संस्था के साथ न्याय करें, संस्था को आगे बढ़ाने का प्रयास करें। संस्थाएं अपना समुचित आध्यात्मिक विकास करती रहें, आध्यात्मिक लक्ष्य के अनुरूप चलें। समय के साथ एडलेस किया जा सकता है। संस्थाओं ने मेरे प्रति जो भावना प्रकट की है, उसे प्रमोदभाव और प्रसन्न भाव से स्वीकार करता हूं।' अमृत महोत्सव के सप्तदिवसीय कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि कुमारश्रमणजी ने किया।

सहयात्री नाटिका का मचन

तलाक आज की एक ज्वलंत व चुनौतीपूर्ण समस्या है। इस समस्या ने सबको आन्दोलित कर रखा है। इससे परिवार और समाज कैसे मुक्त हो सके, इस संदर्भ में कोलकाता के एमेच्योर थियेटर के सदस्यों ने 'सहयात्री' शीर्षक से एक नाटिका का अमृत समवसरण में शानदार मंचन किया। श्री राजेन्द्र भुतोड़िया

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

ने इसकी पटकथा लिखी और निर्देशन किया। नाटिका के सभी कलाकार तेरापंथ समाज के थे। लगभग पौने दो घंटे तक चली इस नाटिका के मंचन का प्रभाव दृष्टिगोचर हुआ।

lkèk&lkfèo;k dk vydj.k&lEeku

१ मई २०१२ को पदाभिषेक दिवस के महनीय प्रसंग पर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कुछ साधु-साध्वियों को अलंकरण-सम्मान प्रदान किया। उनके नाम हैं--

१. मुनि धर्मचन्दजी 'पीयूष'	शासनश्री	४. साध्वी सूरजकुमारीजी (जयपुर)	शासनश्री
२. मुनि पृथ्वीराजजी (श्रीडूंगरगढ़)	शासनश्री	५. साध्वी सूरजकुमारीजी (सर.)	शासनश्री
३. मुनि नगराजजी (सरदारशहर)	वात्सल्यमूर्ति	६. स्व.साध्वी कानकुमारीजी (सर.)	शासनश्री

vkn'k lkfgR; l?k dk HkV

५१००/- श्री बच्छराज पारख (चूरू-चेन्नई) को 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू सुदर्शन-मंजु, सुपौत्र व पौत्रवधू आलोक-स्वाति, अरिहन्त-दीपा, प्रपौत्र अखिलेश, आदीश व प्रपौत्री अनन्या पारख द्वारा प्रदत्त।

२१००/- अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के मुसालिया पदार्पण के उपलक्ष्य में इन्द्रचन्द, अशोक, नमन बोहरा, मुसालिया-चेन्नई द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीयुक्त श्रीचन्दजी बरमेचा (लाडनूं) के ६६वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती तारादेवी बरमेचा, सुपुत्री जयश्री-रवीन्द्र, ममता-अशोक, समता-उत्तम द्वारा प्रदत्त।

२१००/- नूतन गृह प्रवेश के उपलक्ष्य में श्री विजयसिंह संतोषकुमार बोथरा, बीदासर (राज.) विष्णुपुर (प.बं.) द्वारा प्रदत्त।

y[kd è;ku n

१ मई २०१२ को समीक्षा परिषद् की संगोष्ठी में परमपूज्य अचार्यप्रवर द्वारा यह निर्णय किया गया है कि साधु-साध्वियों और समणश्रेणी द्वारा अथवा उनके संदर्भ में लिखित आठ से अधिक पृष्ठों की पुस्तिका साहित्य समिति की लिखित स्वीकृति के बिना प्रकाश में न आए। पूर्व प्रकाशित के पुनः प्रकाशन से पूर्व भी यह स्वीकृति आवश्यक रहेगी।

i=k 0;ogkj d fy, gekjk irk&&

d'koi lkn pronh] icUèkd&vkn'k lkfgR; l?k] }kjk&tu 'orkEcj rjkiFkh lHkk
ik- ckykrjk&…†† ,„„] ft- ckMej ¼jktLFkku½ Qku % ,‹^Š,‡‡…Šƒ] ,‹…‡„†,†^†ƒ
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com
idk'ku fnukd % ‡&‡&„,ƒ„

•

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **d'koi lkn pronhA**